‘पुल ही नहीं, सामाजिक सेतु बनाना भी मकसद’

मुख्यमंत्री ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए किया दो पुलों का उद्घाटन

पटना, जागरण ब्यूरो : मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंगलवार को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए दो पुलों का उद्घाटन किया। मौके पर ही उन्होंने 'पुल' शब्द की व्यापक व्याख्या भी कर डाली। कहा-पुल नदी-नालों के दो किनारों को जोड़ता है। दूरियां घटाता है। समाज भी पुल बने। टूटे दिल आपस में जुड़ें। बिहारी कहलाना अपमान नहीं सम्मान का विषय बने। हमारा असली मकसद यही है।

अस्वस्थ चल रहे श्री कुमार इन दिनों अपने आवास 1, अणे मार्ग से ही सरकारी कामकाज निपटा रहे हैं। आवास से ही आज उन्होंने भागलपुर-कहलगांव- मिर्जा चौक (गेरुआ पुल) और पूर्णिया-कदवा-आबादपुर पथ पर महानंदा नदी पर नवनिर्मित पुलों का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि इच्छा तो थी दोनों स्थानों पर जाने की लेकिन पहले कार्य व्यस्तता और फिर अस्वस्थता के चलते मामला टलता गया। यह ज्यादा दिन नहीं टल सकता था। पुल बन कर तैयार हो तो उसे औपचारिक लोकार्पण के लिए रोकना बेमतलब है। तकनीक के चलते दुनिया छोटी हो गई है। पुल का घर बैठे उद्घाटन हो रहा है, आप हमको और हम आपको देख रहे हैं। उन्होंने इस मौके पर एक वाकया भी सुनाया कि कैसे पटना में बना चितकोहरा का रेलवे ओवरब्रिज बन कर तैयार था। उसे औपचारिक उद्घाटन के लिए रोक कर रखा गया था। विलंब होता देख एक दिन उन लोगों ने बांस-बल्ली हटाई और पुल पार कर गये। उसी दिन से उस पुल पर ट्रैफिक चालू है। उद्घाटन आज तक नहीं हुआ। इसलिए जब पुल बन जाये तो उसे तत्काल चालू कर देना चाहिए। उन्होंने बताया कि दोनों पुल काफी समय से बन रहे थे। गेरुआ के पास पीपा पुल था। बरसात में टूट जाता था। यहां बना स्क्रू पाइल पुल 1965 में ध्वस्त हो गया था। मिर्जा चौकी से भागलपुर की दूरी 64 किमी बढ़ गई थी। अब आवागमन आसान हो जायेगा। कटिहार में बने पुल की भी यही स्थिति थी। उन्होंने पुल निर्माण निगम को युद्धस्तर पर दोनों पुलों को बनाने के लिए बधाई दी। इस मौके पर पथ निर्माण मंत्री प्रेम कुमार, सचिव राजकुमार सिंह भी मौजूद थे। धन्यवाद ज्ञापन पुल निर्माण निगम के प्रबंध निदेशक प्रत्यय अमृत ने किया।